प्रोग्रेसिव एज्युकेशन सोसायटी का

मॉडर्न कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय (स्वायत्त), पुणे-४११००५, महाराष्ट्र

हिंदी विभाग

द्वारा प्रकाशित

"अरुणिमा"

(मासिक पत्रिका)

अप्रैल: २०२१

प्रकाशक:
प्रा. शामकांत देशमुख,
डॉ. राजेंद्र झुंजारराव
संपादक: डॉ. प्रेरणा उबाळे
सहायक: अनिसा शेख़

कविता : समर शेष है
कवि : रामधारी सिंह दिनकर
संकलन : अनिसा शेख
द्वितीय वर्ष, एम. ए. हिंदी साहित्य

वह्नि के शर से,
भरो भुवन का अंग कुंकुम से,
कुसुम से, केसर से ?
कुंकुम ? लेपूं किसे ? सुनाऊँ
किसको कोमल गान?
तड़प रहा आँखों के आगे भूखा
हिन्दुस्तान ।
फूलों के रंगीन लहर पर ओ
उतरनेवाले !
ओ रेशमी नगर के वासी! ओ
छवि के मतवाले!
सकल देश में हालाहल है,
दिल्ली में हाला है,
दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में
अंधियाला है ।
मखमल के पर्दों के बाहर, फूलों
के उस पार,
ज्यों का त्यों है खड़ा, आज भी
मरघट-सा संसार ।
वह संसार जहाँ तक पहुँची अब
तक नहीं किरण है
जहाँ क्षितिज है शून्य, अभी तक
अंबर तिमिर वरण है
देख जहाँ का दृश्य आज भी
अन्त:स्थल हिलता है
माँ को लज्ज वसन और शिशु
को न क्षीर मिलता है
पूज रहा है जहाँ चकित हो जन-
जन देख अकाज
सात वर्ष हो गये राह में, अटका
कहाँ स्वराज?
ढीली करो धनुष की डोरी,
तरकस का कस खोलो ,
किसने कहा, युद्ध की वेला चली
गयी, शांति से बोलो ?
किसने कहा, और मत वेधो हृदय
अटका कहाँ स्वराज ? बोल
दिल्ली ! तू क्या कहती है ?
तू रानी बन गयी वेदना जनता
क्यों सहती है ?
सबके भाग्य दबा रखे हैं किसने
अपने कर में ?
उतरी थी जो विभा, हुई बंदिनी
बता किस घर में
समर शेष है, यह प्रकाश बंदीगृह
से छूटेगा
और नहीं तो तुझ पर पापिनी !
महावज्र टूटेगा
समर शेष है, उस स्वराज को
सत्य बनाना होगा
जिसका है ये न्यास उसे सत्वर
पहुचाना होगा
धारा के मग में अनेक जो पर्वत
खडे हुए हैं
गंगा का पथ रोक इन्द्र के गज
जो अडे हुए हैं
कह दो उनसे झुके अगर तो जग
मे यश पाएंगे
अड़े रहे अगर तो ऐरावत पत्तों से
बह जाएँगे
समर शेष है, जनगंगा को खुल
कर लहराने दो
शिखरों को डूबने और मुकुटों को
बह जाने दो
पथरीली ऊँची जमीन है ? तो
उसको तोड़ेंगे
समतल पीटे बिना समर कि भूमि
नहीं छोड़ेंगे
समर शेष है, चलो ज्योतियों के
बरसाते तीर
खण्ड-खण्ड हो गिरे विषमता की
काली जंजीर
समर शेष है, अभी मनुज भक्षी
हुंकार रहे हैं
गाँधी का पी रुधिर जवाहर पर
फुंकार रहे हैं
समर शेष है, अहंकार इनका
हरना बाकी है
वृक को दंतहीन, अहि को निर्विष
करना बाकी है
समर शेष है, शपथ धर्म की
लाना है वह काल
विचरें अभय देश में गाँधी और
जवाहर लाल
तिमिर पुत्र ये दस्यु कहीं कोई
दुष्काण्ड रचें ना
सावधान हो खडी देश भर में
गाँधी की सेना
बलि देकर भी बलि! स्नेह का यह
मृदु व्रत साधो रे
मंदिर औ' मस्जिद दोनों पर एक
तार बाँधो रे
समर शेष है, नहीं पाप का भागी
केवल व्याध
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा
उनके भी अपराध ।

कवि वृंद के नीतिपरक दोहे -

संकलन : माडियाळकर
अभिषेक
तृतीय वर्ष कला, हिंदी

1. जाकौ बुद्धि-बल होत है,ताहि न रिपु को त्रास ।
घन-बूँदि कह करि सके,सिर पर छतना जास ।।
अर्थ :- वृंद जी इस दोहे में कहते हैं कि जिसके पास बुद्धिरूपी बल होता है,उसे शत्रु का भय नहीं होता है । ठीक उसी तरह जिसके सिर छत हो,बादल और वर्षा की बूंदों से उसे कोई भय नहीं होता है ।

2. बिना स्वार्थ कैसे सहे,को करुवे बैन ।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन ।।
अर्थ :- वृंद जी इस दोहे में कहते हैं कि बिना स्वार्थ के कोई भी व्यक्ति कड़वे वचन नहीं सहता है । जैसे दुधारू गाय की लात खाने के बाद भी व्यक्ति उसे दुलारता है और पुचकारता है क्योंकि दूध उसी से मिलना है ।

3. मूढ़ तहाँ ही मानिये,जहाँ न पंडित होय ।
दीपक को रवि के उदै,बात न पूछै कोय ।।
अर्थ:- वृंद जी इस दोहे में कहते हैं कि मूर्ख व्यक्ति को वहीं महत्व देना चाहिए जहाँ कोई विद्वान ना हो, क्योंकि विद्वान के होने के बाद मूर्ख का कोई महत्व नहीं रह जाता है । जैसे कि सूर्य के उदय होने के बाद दीपक को कोई महत्व नहीं देता है ।

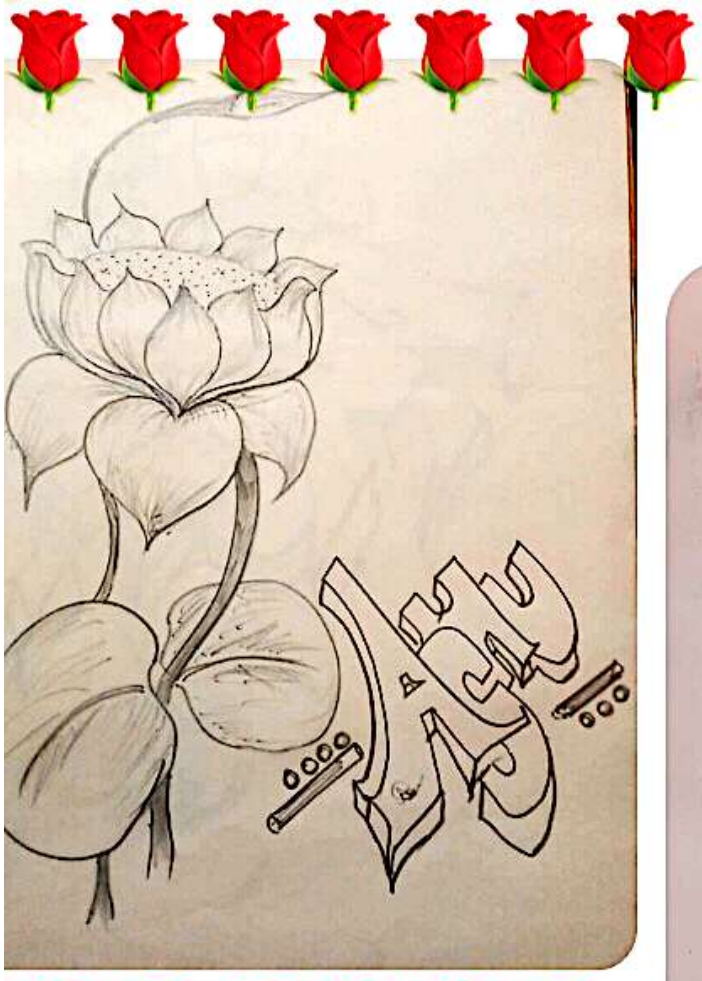

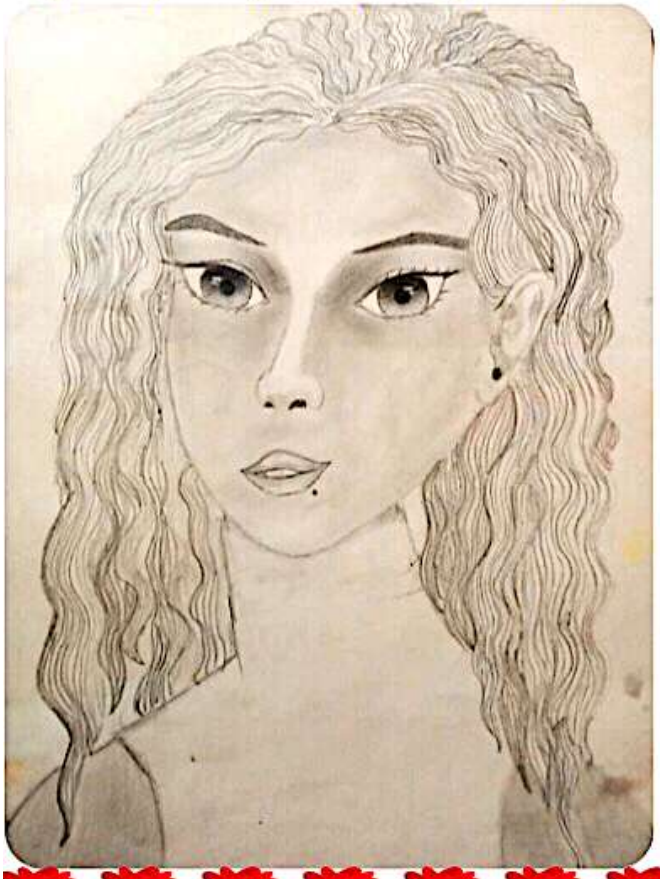

अश्विनी दाभाडे
द्वितीय वर्ष, कला

बहुत से लेखकों और कवियों को हम उनके उपनामों से अधिक जानते हैं। उनके नाम और उपनाम पढ़िए-

1. जयशंकर साहू - 'प्रसाद'
2. सूर्यकांत त्रिपाठी - 'निराला'
3. गुसाईं दत्त - सुमित्रानन्दन पन्त
4. धनपत राय – प्रेमचन्द
5. रामधारी सिंह - 'दिनकर'
6. मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग ख़ान – मिर्ज़ा ग़ालिब
7. मुन्नन द्विवेदी - शांतिप्रिय द्विवेदी
8. हरिप्रसाद द्विवेदी - वियोगि हरि
9. वैद्यनाथ मिश्र – नागार्जुन
10. हरिवंश राय श्रीवास्तव - 'बच्चन'*
11. रघुपति सहाय - फिराक गोरखपुरी
12. सम्पूर्ण सिंह कालरा – गुलज़ार
13. धर्मवीर सक्सेना - धर्मवीर भारती
14. पुष्पलता शर्मा – पुष्पा भारती
15. शिवमंगल सिंह - 'सुमन'
16. मदन मोहन गुगलानी - मोहन राकेश
17. कैलाश सक्सेना – कमलेश्वर
18. उपेन्द्रनाथ शर्मा - 'अश्क'
19. फणीश्वर नाथ - 'रेणु'
20. गोपालदास सक्सेना - 'नीरज'*
21. श्रीराम वर्मा – अमरकान्त
22. रमेश चन्द्र - शैलेष मटियानी
23. सुदामा पाण्डेय - 'धूमिल'
24. बालस्वरूप भटनागर - 'राही'
25. गंगाप्रसाद उनियाल - 'विमल'
26. रामेश्वर शुक्ल - 'अंचल'
27. वासुदेव सिंह - त्रिलोचन शास्त्री
28. (सच्चिदानंद) हीरानन्द वात्स्यायन - 'अज्ञेय'
29. (तिरुमल्लै) नम्बाकम (वीर) राघव (आचार्य) - रांगेय राघव
30. (पाण्डेय) बेचन शर्मा - 'उग्र'*
31. (राय) देवीप्रसाद - 'पूर्ण'
32. (पण्डित) चन्द्रधर शर्मा - 'गुलेरी'
33. बालकृष्ण शर्मा - 'नवीन'
34. गजानन माधव - 'मुक्तिबोध'
35. गोपाल शरण सिंह - 'नेपाली'
36. जनार्दन प्रसाद झा - 'द्विज'
37. सत्यनारायण - 'कविरत्न'
38. भगवान वर्मा - लाला भगवानदीन
39. बालमुकुन्द गुप्त – शिवशम्भु
40. गयाप्रसाद शुक्ल - 'सनेही'*

41. अयोध्यासिंह उपाध्याय - 'हरिऔध'
42. नाथूराम शर्मा - 'शंकर'
43. बदरीनारायण चौधरी - 'प्रेमघन'
44. जगन्नाथ दास - 'रत्नाकर'
45. सदासुख लाल - 'नियाज'
46. सैयद गुलाम नबी – रसलीन
47. सैयद इब्राहिम – रसखान
48. मलिक मोहम्मद - 'जायसी'
49. विश्वम्भर नाथ शर्मा - 'कौशिक'
50. चण्डीप्रसाद - 'हृदयेश'*
51. हरिकृष्ण शर्मा - 'प्रेमी'
52. गणेशबिहारी मिश्र, श्यामबिहारी मिश्र, शुकदेवबिहारी मिश्र - 'मिश्रबन्धु'
53. गुलशेर अहमद खान - 'शानी'
54. रामरिख बंसल - 'मनहर'
55. काशीनाथ उपाध्याय - बेधडक बनारसी
56. कृष्णदेव प्रसाद गौड - बेढब बनारसी
57. प्रभुलाल गर्ग - काका हाथरसी
58. चन्द्रभूषण त्रिवेदी - रमई काका
59. राजेन्द्र बाला घोष - बंग महिला
60. महेन्द्र कुमारी - मन्नू भण्डारी*
61. प्रेम कुमार कुन्द्रा – प्रेम जनमेजय
62. अनिल कुमार जैन – अनिल जनविजय
63. सरोजिनी मलिक - 'प्रीतम'
64. उषा सक्सेना - 'प्रियंवदा'
65. गौरा पन्त - 'शिवानी'
66. सुशील कुमार चड्ढा – हुल्लड़ मुरादाबादी

कविता भी है तो स्त्री ही
कोई उसे सुनता नहीं,
सुनता भी है तो समझता नहीं,
सब उसके प्रेमी हैं और दोस्त कोई नहीं!

वरिष्ठ कवयित्री अनामिका जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए बहुत-बहुत बधाई।

अंग्रेजी की प्रोफेसर अनामिका हिन्दी कविता के लिए अकादमी सम्मान पाने वाली पहली महिला

स्त्रियाँ

अनामिका

पढ़ा गया हमको
जैसे पढ़ा जाता है काग़ज़
बच्चों की फटी कॉपियों का
चनाजोर गर्म के लिफ़ाफ़े
बनाने के पहले!
देखा गया हमको
जैसे कि कुफ़्त हो उनींदे
देखी जाती है कलाई घड़ी
अलस्सुबह अलार्म बजने के
बाद!
सुना गया हमको
यों ही उड़ते मन से
जैसे सुने जाते हैं फ़िल्मी गाने
सस्ते कैसेटों पर
ठसाठस्स भरी हुई बस में!
भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दुःख की तरह!
एक दिन हमने कहा
हम भी इंसान हैं–

हमें क़ायदे से पढ़ो एक-एक
अक्षर
जैसे पढ़ा होगा बी.ए. के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन!
देखो तो ऐसे
जैसे कि ठिठुरते हुए देखी
जाती है
बहुत दूर जलती हुई आग!
सुनो हमें अनहद की तरह
और समझो जैसे समझी
जाती है
नई-नई सीखी हुई भाषा!
इतना सुनना था कि अधर में
लटकती हुई
एक अदृश्य टहनी से
टिड्डियाँ उड़ीं और रंगीन
अफ़वाहें
चीख़ती हुई चीं-चीं
'दुश्चरित्र महिलाएँ, दुश्चरित्र
महिलाएँ–

किन्हीं सरपरस्तों के दम पर
फूलीं-फैलीं
अगरधत्त जंगली लताएँ!
खाती-पीती, सुख से ऊबी
और बेकार बेचैन, आवारा
महिलाओं का ही
शग़ल हैं ये कहानियाँ और
कविताएँ...।
फिर ये उन्होंने थोड़े ही लिखी
हैं
(कनखियाँ, इशारे, फिर
कनखी)
बाक़ी कहानी बस कनखी है।
हे परमपिताओ,
परमपुरुषो–

बख़्शो, बख़्शो, अब हमें
बख़्शो!

हिन्दवी
hindwi.org
मैं एक दरवाज़ा थी
मुझे जितना पीटा गया
मैं उतना ही खुलती गई
अनामिका

'रह जाएगी करुणा, रह जाएगी मैत्री,
बाक़ी सब ढह जाएगा...'
अनामिका